शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

foKfIr

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

rjkiFk dh dUnh; xfrfofèk;k dk lokfèkd ykdfi; lkIrkfgd e[ki=k

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक १२ : नई दिल्ली : २४-३० जून २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आदि श्रमणी सुखसातापूर्वक पचपदरा विराज रहे हैं। पूज्यप्रवर का बाईसदिवसीय पचपदरा सफल प्रवास समाप्ति की ओर है। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार आचार्यप्रवर का २८ जून को प्रातः यहां से जसोल की ओर विहार हो जाएगा। एक दिन बालोतरा विराज कर आचार्यप्रवर २६ जून को जसोल पधार जाएंगे। जसोल में चातुर्मासिक प्रवास संबंधी तैयारियां लगभग पूरी हो चुकी हैं।

le>k ikik dk&f

µvkpk;l egkJe.k

%ije ikou vkpk;ioj dh nufUnu iopu Ük[kyk d vUrxr xr fnuk vBkjg iki ij iHkkod iopu g,A ;i iopu u doy lkèkdk d fy,] vfir iR;d 0;fDr d fy, iBuh; vkj ij.kkLin gA foKfIr d ikBdk d fy, og iopuekyk Øe'k% idkf'kr dh tk jgh g%

''आर्हत वाङ्मय में कहा गया है--'पाणे य नाइवाएज्जा, से समिए त्तिं वुच्चई ताई'--समित किसे कहा जाता है? शास्त्रकार ने कहा--'जो प्राणातिपात न करे, हिंसा न करे, वह व्यक्ति समित कहलाता है। साधु समित होता है या होना चाहिए। प्राणियों की हिंसा से बचना उसका धर्म है। हालांकि शरीरधारी के लिए लंबे समय तक हिंसा से पूर्णतया बचना कठिन होता है। शरीर को चलाने के लिए हिंसा का सहारा लेना ही पड़ता है। गृहस्थ के लिए तो हिंसा से पूर्णतया बचना कठिन है ही, साधु के लिए भी द्रव्य हिंसा से पूर्णतया अपना बचाव कर पाना बहुत मुश्किल है। हमारे साधु लोग यदा-कदा रात को आलोयणा लेते हैं। आज हरियाली का स्पर्श हो गया, आज पृथ्वीकाय से संस्पर्श हो गया--आदि-आदि बातें उनकी ओर से आती रहती हैं, यानी हिंसा से पूर्णतया बचाव उनके लिए भी कठिन हो जाता है। उसके लिए उन्हें आलोचना करनी होती है, शुद्धि करनी होती है। साधु पंचमी समिति के लिए जंगल में जाता है, उस दौरान कहीं न कहीं किसी रूप में हरियाली का स्पर्श हो जाता है तो यह भी हिंसा की बात है। साधु को कभी नौका विहार भी करना पड़ता है तो वहां भी हिंसा की संभावना रहती है। इस प्रकार यत्र-तत्र, कहीं-कहीं साधु भी हिंसा से अपना बचाव नहीं कर पाता।

बहुधा दो शब्द काम में लिए जाते हैं--द्रव्य और भाव। इनके साथ हिंसा शब्द को जोड़ दें तो कह सकते हैं--द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा। एक साधु जागरूक है, केवली है, वीतराग है, चल रहा है, चलते-चलते आकस्मिक रूप से किसी प्राणी का वध हो गया तो कहा जा सकता है कि उस साधु के द्वारा द्रव्य हिंसा हुई है, भाव हिंसा नहीं हुई। सिद्धान्त कहता है--वह साधु हिंसा के पाप का भागी नहीं बनता है, अपितु जिस समय जीव हिंसा हुई, उसके तो पुण्य कर्म का बंध ही हो सकता है या होता है, पाप का बंध नहीं होता।

हिंसा का विषय कुछ जटिल है, बहुभंग जटिलम्। एक जगह कहा गया--

vk;kpo vfgIk vk;k fgIfÙk fuPNvk ,IA
tk gkb vIieÙkk vfgIvk fgIvk b;jk Ï vk?k fu;fDr %‰‡† Ï

आत्मा ही अहिंसा है, आत्मा ही हिंसा है। यह निश्चयनय की बात है। जो अप्रमत्त होता है, वह अहिंसक

होता है और जो प्रमत्त होता है, वह हिंसक होता है। जैन वाङ्मय में अठारह पाप बताए गए हैं। अठारह पापों में पहला पाप है प्राणातिपात पाप। जिन्हें पच्चीस बोल कंठस्थ हैं, वे बालक-बालिकाएं, श्रावक-श्राविकाएं चौदहवें बोल की स्मृति कर सकते हैं। उसमें अठारह पाप भी आते हैं। ये अठारह ऐसे आचरण हैं, जिनसे आदमी की आत्मा पाप कर्म से आबद्ध हो जाती है।

हिंसा के तीन प्रकार बताए गए हैं--आरंभजा हिंसा, प्रतिरोधजा हिंसा और संकल्पजा हिंसा।

vkjHktk fgalk %& अन्न जीवन की आवश्यकता है। खाने को रोटी चाहिए, रोटी के लिए अन्न उपजाना जरूरी है और अन्न पैदा करने में जीव हिंसा हो जाती है। खेत को जोतने, बोने, सिंचाई करने, काटने, फसल को घर लाने और उसका भंडारण करने तक न जाने कितनी प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ता है और उसमें सूक्ष्म जीवों की हिंसा होती है। यह लक्ष्यपूर्वक की गई हिंसा नहीं है। कृषि और जीवन निर्वाह के लिए किए जाने वाले उपक्रमों में ऐसा हो जाता है। यह आरंभजा हिंसा है।

मैं मध्यप्रदेश की यात्रा में था। एक गांव में थोड़ी देर के लिए रुका तो गांव के किसान लोग इकट्ठा हो गए। उनमें से एक बोला--'महात्माजी! हम तो पापी लोग हैं। खेती करते हैं, उसमें दवा छिड़कते हैं, उस समय असंख्य जीवों की हिंसा हो जाती है। आप हमें कोई प्रायश्चित्त दे दें, जिससे हमारी शुद्धि हो जाए।' मैंने उन्हें इस विषय में कुछ बता दिया। फिर मैंने सोचा कि खेती में भी हिंसा कैसे कम हो सके, इस पर भी प्रयास होना चाहिए। वहां भी हिंसा का अल्पीकरण होना चाहिए।

ifrjksèktk fgalk %& अपनी सुरक्षा के साथ-साथ देश की सुरक्षा करना हर आदमी का कर्तव्य है। शत्रु की सेना देश पर आक्रमण कर दे तो सैनिक प्राणपण से उसका प्रतिरोध करते हैं। उस प्रतिरोध में बचाव पक्ष के और आक्रान्ता पक्ष के सैनिक बड़ी संख्या में मारे जाते हैं और हताहत होते हैं। यहां मूल लक्ष्य देश की सुरक्षा है। परन्तु प्रतिरोध करने में हिंसा हो जाती है। यह प्रतिरोधजा हिंसा है। परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञ के दिल्ली प्रवास में मुझे उत्तर प्रदेश के नोएडा में जाने का निर्देश मिला। मैं वहां गया। उस समय एक पूर्व सैनिक यदा-कदा हमारे पास आता। एक दिन बातचीत के क्रम में वह बोला--'महाराज! मेरी तो इच्छा है कि एक बार हिन्दुस्तान व पाकिस्तान में युद्ध छिड़ जाए और आरपार का फैसला हो जाए।' उस समय कारगिल का संघर्ष चल रहा था। हमने कहा--'भाई, हम तो शान्ति की बात करते हैं, तुम हिंसा की बात क्यों सोचते हो?' वह बोला--'महाराज! मेरी तो हार्दिक इच्छा है कि युद्ध शुरू हो जाए और हम रिटायर्ड फौजियों को भी उसमें भाग लेने का अवसर दिया जाए। मेरे प्राण भी युद्ध में काम आ जाएं। देश के लिए जान देना और जान लेना गौरव की बात होती है।' मैंने उस सैनिक में देशभक्ति की उत्कट भावना देखी। इस तरह सुरक्षा के लिए प्रतिरोध के रूप में जो हिंसा होती है, वह प्रतिरोधजा हिंसा है। आरंभजा और प्रतिरोधजा हिंसा तो गृहस्थ जीवन में आवश्यक हो जाती है, लेकिन ये हिंसाएं कोई जघन्य अपराध की श्रेणी में नहीं आती।

ladYitk fgalk %& आवेग, आवेश और लोभ के वशीभूत होकर आदमी अपराध और हिंसा में चला जाता है। किसी को मारने का संकल्प करके उसकी हत्या कर देता है। मार-काट में कुछ लोगों को आनंद मिलता है। इस तरह के क्रूर कर्म में उन्हें सुख मिलता है। कुछ लोग आदतन अपराधी हो जाते हैं। दिन भर में जब तक कोई न कोई हिंसक कार्य वे नहीं करते, उन्हें चैन नहीं मिलता। यह संकल्पजा हिंसा है। दो मित्रों की कथा आपने सुनी होगी। दो मित्र साथ-साथ कमाई करने के उद्देश्य से बाहर गए। दोनों ने तय किया था कि साथ मिलकर कमाएंगे। धंधे में घाटा हो या मुनाफा, हिस्सा आधा-आधा रहेगा। एक वर्ष के बाद संचित पूंजी को बराबर बांट लेंगे। दोनों ने ऐसा ही किया। दैवयोग से उन्हें धंधे में अच्छा मुनाफा हुआ। दोनों अपने गांव की ओर चल पड़े। उस समय आज की तरह यातायात के साधन सुलभ नहीं थे। दूर देश की यात्रा भी पैदल होती थी। दोनों मित्र दिन भर पैदल यात्रा करते और शाम को रात्रि-विश्राम हेतु कहीं आश्रय ले लेते।

वर्ष भर की संचित जमा-पूंजी उनके पास थी। गांव पहुंच जाने के बाद उसका बंटवारा करने का निश्चय हुआ था। लेकिन यात्रा संपन्न कर गांव पहुंचने के पूर्व एक के मन में लोभजनित कुविचार पैदा हो गया। उसके मन में आया कि गांव पहुंचने के बाद तो कमाया हुआ धन बंट जाएगा। क्यों न ऐसा कुछ किया जाए कि सारा धन अकेले के हिस्से में आ जाए। विचारों का भी सक्रमण होता है। एक के मन में यह विचार उठा तो दूसरा भी कुछ ऐसा ही सोचने लगा। सारा धन हस्तगत करने का एक ही उपाय था कि दूसरे को मार दिया जाए। अन्ततः एक दूसरे को मारने का उन दोनों ने अपने-अपने मन में पक्का निश्चय कर लिया। गुप्त रूप से योजना भी बना ली। एक ने दूसरे को जहर देकर मारने का प्लान बनाया और कहीं से लड्डुओं का प्रबंध कर उसमें तेज असर वाला विष मिला दिया। सोचा था कि मौका मिलने पर इन्हें मित्र को खिला कर हमेशा के लिए उससे छुटकारा पा लूंगा तो दूसरे ने मित्र को मौत के घाट उतारने के लिए एक छुरे का प्रबंध कर लिया।

योजना की क्रियान्विति का समय आ गया। रात्रि के समय एक मित्र सो गया, लेकिन दूसरे की आंखों से नींद गायब थी। वह मित्र के सो जाने की प्रतीक्षा कर रहा था। जब उसे विश्वास हो गया कि यह गहरी नींद में है तो उसने छुरा निकाल कर उसकी छाती में भोंक दिया। सारे धन का अकेला मालिक होने की अनुभूति उसे रोमांचित कर रही थी। उसने अपने मृत साथी की गठरी खोली। अब हिस्सेदार कोई था नहीं। सारा धन और सारे लड्डू उसके थे। मित्र की लाश को बाद में ठिकाने लगाऊंगा, पहले आराम से लड्डुओं का भोग क्यों न लगा लिया जाए--ऐसा सोच कर लड्डुओं की वास्तविकता से अनजान उसने उसी समय उनका सेवन कर लिया। अपनी योजना में इतनी आसानी से सफल हो जाने की प्रसन्नता में उसने वे सारे विषैले लड्डू खाकर तृप्ति का अनुभव किया।

जहरीले लड्डुओं ने तत्काल अपना असर दिखाया और कुछ ही देर में उसका प्राणान्त हो गया। अब वहां पड़ी थी दो लाशें और उनके निकट रखी थी उनकी वर्ष भर की कमाई, जिसका उपभोग करने वाला उन दोनों में से कोई भी नहीं था, यह संकल्पजा हिंसा है।

आदमी के जीवन में अहिंसा का विकास हो, अहिंसा की साधना हो, मन वचन काय से व्यक्ति हिंसा से बचे। हिंसा का एक कारण आक्रोश है, गुस्सा है, आवेश है। आदमी गुस्से में आकर भी किसी को मारता है, पीटता है, तकलीफ देता है। अगर गुस्से पर नियंत्रण हो जाए, गुस्सा शान्त हो जाए तो आदमी अपने आपको हिंसा से काफी बचा सकता है। किसी के द्वारा कही गई कटु बात आक्रोश पैदा करती है। आचार्य भिक्षु के जीवन में कितनी अहिंसा थी। ऐसे कितने ही प्रसंग हैं, जब आचार्य भिक्षु ने विरोधियों के प्रहार का अहिंसक प्रतिकार करते हुए तनावपूर्ण प्रसंग को विनोद में परिवर्तित कर दिया।

विश्रुत प्रसंग है--मार्ग में आचार्य भिक्षु को एक आदमी मिला। उसने पूछा--'तुम्हारा क्या नाम है?' स्वामीजी ने कहा--'मुझे भीखण कहते हैं।'

उस व्यक्ति ने तीक्ष्ण दृष्टि से स्वामीजी को देखा और कहा--'ओह! यह तो बुरा हुआ।'

स्वामीजी ने कहा--'बुरा क्या हुआ भाई?'

आगन्तुक व्यक्ति ने कहा--'बुरा यह हुआ कि सवेरे-सवेरे तुम्हारा मुंह देख लिया। अब नरक में जाना पड़ेगा।' यह निश्चित रूप से अपमानजनक बात है। आज कोई किसी से इस तरह की बात कहे तो उसे कड़ा हिंसक प्रतिकार झेलना पड़ सकता है। लेकिन वे तो आचार्य भिक्षु थे। इतिहास बताता है कि वे अपने उस विरोधी की बात पर आक्रोशित नहीं हुए। उन्होंने पूछा--'तुम्हारा मुंह देखने वाले को कहां जाना पड़ता है?'

'मेरा मुंह देखने वाले को स्वर्ग या मोक्ष मिलता है'--उस व्यक्ति ने किंचित अहंकार की भाषा में कहा।

स्वामीजी ने कहा--'मेरी ऐसी मान्यता नहीं कि किसी का मुंह देखने मात्र से स्वर्ग या नरक मिलता है। स्वर्ग और नरक की प्राप्ति तो नितान्त कर्म पर आधारित है। तुम कह रहे हो कि तुम्हारा मुंह देखने से स्वर्ग मिलता है तो मेरे लिए अच्छा ही हुआ, मुझे तो स्वर्ग मिल जाएगा। तुम्हें क्या मिलेगा, यह तुम जानो।'

आचार्य भिक्षु का जीवन संघर्षों की महागाथा है। दीर्घकाल तक उन्हें पूरा आहार सुलभ नहीं हुआ। पानी और स्थान की भी समस्या रही। फिर भी अनेकानेक विषम परिस्थितियों से जूझते हुए उन्होंने कठिन तप किया, विशिष्ट साधना की। वे एक गहरे स्वाध्यायी और महान साधक थे, ऐसे विशुद्ध साधु जिसके जीवन में अहिंसा मूर्तिमान थी। उनके जीवन में अनेक भयंकर विरोध आए, किन्तु उस महापुरुष ने अपने आत्मबल से उन्हें सहा।

प्राणातिपात ऐसा पाप है जो आदमी की आत्मा को भारी बनाने वाला होता है। हर व्यक्ति यह सोचे कि मैं हिंसा से अपने आप को कैसे और कितना बचा सकता हूं? मेरे जीवन में हिंसा का अल्पीकरण कैसे हो सकता है? अगर अहिंसक चेतना का विकास हो गया और जीव हिंसा से विरत रहने की भावना हमारे मन में जाग गई तो जीवन का उत्थान अवश्यंभावी है।'

ije J); vkpk;Jh egkJe.k ipinjk e

xg.k dj InKku

f... tuA परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातःकालीन कार्यक्रम के अन्तर्गत अपने पावन प्रवचन में कहा 'हमारी चेतना का एक आयाम है--ज्ञान। दुनिया में ऐसा कोई प्राणी नहीं हो सकता, जिसमें किसी प्रकार का ज्ञान न हो। ज्ञान की चेतना हर प्राणी में उद्घाटित रहती है। जिसमें उपयोग है, ज्ञान का व्यवहार है, वही जीव है। जिसे केवलज्ञान प्राप्त हो जाता है, वह अनंत ज्ञानसंपन्न बन जाता है। ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम के द्वारा व्यक्ति ज्ञान प्राप्त कर सकता है और उसके उदय से ज्ञान चेतना आवृत हो जाती है। ज्ञान और ज्ञानी का मखौल उड़ाना उनकी आशातना है। इससे ज्ञानावरणीय कर्म का बंधन होता है। हमें ज्ञान और ज्ञानी के प्रति सम्मान का भाव रखना चाहिए। सद्ज्ञान को ग्रहण कर इस दुर्लभ मनुष्य जीवन को सफल बनाएं।'

प्रवचन के मध्य पूज्यप्रवर ने महामना आचार्य भिक्षु, श्रीमज्जयाचार्य व परमपूज्य आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के महान ज्ञान के विविध प्रसंगों को प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में समणी प्रणवप्रज्ञाजी ने गीत का संगान किया। टमकोर से समागत समणी पुण्यप्रज्ञाजी और समणी स्वर्णप्रज्ञाजी ने पूज्यवर के दर्शन से प्राप्त प्रसन्नता को गीत के माध्यम से अभिव्यक्ति दी। मुनि विजयकुमारजी ने भी गीत का संगान किया। मंत्री मुनिश्री का प्रेरणादायी वक्तव्य हुआ।

आज मध्याह्न में पचपदरा के श्रद्धालु परिवारों की उपासना का क्रम प्रारंभ हुआ। पूज्यप्रवर की उपासना के इस दुर्लभ अवसर को प्राप्त कर लोग कृतार्थता की अनुभूति कर रहे थे। इस अवसर पर सेवार्थी परिवारों के सदस्यों ने विविध संकल्प स्वीकार किए।

IQyrk dk egke=k g i#"kkFk

f† tuA परम पावन आचार्यवर की मंगल सन्निधि में आज राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद की पचपदरा शाखा द्वारा छात्र अहिंसा प्रशिक्षण कार्यशाला का समायोजन किया गया। प्रातःकालीन कार्यक्रम के प्रारंभ में छात्राओं द्वारा अणुव्रत गीत का संगान किया गया। श्री भूपत चोपड़ा, डा.वीरेन्द्र गांधी, स्थानीय अणुव्रत शिक्षक संसद के संयोजक श्री चन्द्रशेखरजी एवं हाजी गुलाब खान ने अपने विचारों को अभिव्यक्ति दी। कार्यकर्ताओं द्वारा पूज्यप्रवर के पादाम्बुज में नशामुक्ति संकल्पपत्र समर्पित किए गए। समणी स्वर्णप्रज्ञाजी ने गीत का संगान किया।

मंत्री मुनिश्री ने अपने प्रेरक अभिभाषण में कहा--'जीवनविज्ञान एक ऐसा उपक्रम है, जिसके विभिन्न आयामों के द्वारा शक्तिसंपन्न व्यक्तित्व का निर्माण होता है। हमारे भीतर अनेक विशेषताएं हैं। यदि उन्हें

जागृत कर लिया जाए तो हम शक्तिसंपन्न बन सकते हैं, अन्यथा गुण होते हुए भी व्यक्ति निर्बलता का अनुभव करता है।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'ज्ञानी आदमी के जीवन का सार है कि वह अहिंसा के पथ पर चले। अहिंसा से जुड़ा हुआ तत्त्व है--समता। समत्वभाव पुष्ट होने पर जीवन में अहिंसा विकसित होने लगती है। जिस समाज व राष्ट्र में अहिंसा का माहौल है, वहां शान्ति रहती है। वहां की जनता अमन-चैन से रहती है। समाज में यदि हिंसा व्याप्त रहती है तो भौतिक और आर्थिक विकास में भी बाधा आती है। परिवार, समाज और राष्ट्र की स्वस्थता के लिए भौतिक और आर्थिक विकास के साथ-साथ नैतिक और आध्यात्मिक विकास भी आवश्यक है। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन किया। अणुव्रत का दर्शन व्यक्ति को संयममय जीवन जीने की प्रेरणा देता है। यदि अणुव्रत के नियम जन मानस में आ जाएं तो अपराध को काफी नियंत्रित किया जा सकता है।'

अणुव्रत को विद्यार्थियों के लिए भी महत्त्वपूर्ण बताते हुए आचार्यवर ने कहा--'अणुव्रत बालपीढ़ी में सुसंस्कार निर्माण की दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी उपक्रम है। जीवनविज्ञान के द्वारा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की परिकल्पना प्रस्तुत की गई और उसके लिए प्रयोग भी निर्दिष्ट किए गए। भावनात्मक विशुद्धिरहित केवल बौद्धिक विकास समस्या उत्पन्न करने वाला बन सकता है। इसलिए विद्यार्थियों में बौद्धिक विकास के साथ-साथ मानसिक और भावनात्मक विकास भी अपेक्षित होता है।'

कार्यशाला में उपस्थित छात्र-छात्राओं को प्रेरणा प्रदान करते हुए आचार्यवर ने कहा--'विद्यार्थियों में पुरुषार्थ की चेतना जागे, यह अपेक्षित है। आलस्य विकास में बाधक बनता है। जीवन में सफलता प्राप्त करने का महामंत्र है--सही दिशा में अपने पुरुषार्थ का नियोजन करना। पुरुषार्थ भाग्य का निर्माता होता है। बालपीढ़ी में ज्ञान के साथ आचार भी उन्नति को प्राप्त हो। संकल्पशक्ति के द्वारा बालपीढ़ी अपनी बुराइयों को दूर करने का प्रयास करे। विद्यार्थियों के जीवन में नैतिकता के प्रति निष्ठा हो। उनके जीवन में अणुव्रत का प्रभाव हो तो वे अपना अच्छा विकास कर सकते हैं।'

पूज्य आचार्यवर की प्रेरणा से कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। पूज्य आचार्यवर ने आज से श्रीमज्जयाचार्य द्वारा रचित शासन महास्तंभ मुनि हेमराजजी (सिरियारी) के जीवन पर आधारित **^geuojlk*** आख्यान का वाचन प्रारंभ किया। राजस्थानी भाषा में रोचक और सरस शैली में पूज्यवर के मुखारविन्द से इस आख्यान का श्रवण जनता को ऐतिहासिक जानकारी उपलब्ध कराने के साथ-साथ आह्लाददायक भी सिद्ध हो रहा है।

एकदिवसीय छात्र अहिंसा प्रशिक्षण सम्मेलन में पचपदरा के छह विद्यालयों से २०१ विद्यार्थी संभागी बने। सम्मेलन के विभिन्न सत्रों में मुनि उदितकुमारजी, मुनि जम्बूकुमारजी (मिंजूर), श्री रमेश जीनगर, श्री मेघराज अरोड़ा, श्री राजूराम प्रजापत, श्री सतीश शांडिल्य, श्री प्रदीप चौहान, श्री डूंगरमल बागरेचा, श्री कमलेश एच.खारवाल आदि के वक्तव्य भी हुए। आज रात्रि में भक्ति संगीत संन्ध्या का आयोजन किया गया, जिसमें अनेक संगायकों ने अपनी प्रस्तुतियां दीं।

ikf.kel=k d ifr jg vudik Hkko

f‡ tuA परमपूज्य आचार्यप्रवर द्वारा प्रातः पचपदरा के वृद्ध, रुग्ण और अशक्त श्रद्धालुओं को दर्शन देने के क्रम में कार्यकर्ताओं के अनुरोध पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा संचालित शाखा स्थल पर पधारे। वहां कार्यकर्ताओं ने आचार्यप्रवर से मंगलपाठ का श्रवण किया।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने कहा--'जैन वाङ्मय में कर्मवाद का विस्तार से वर्णन मिलता है। इसके अन्तर्गत आठ कर्मों के दो वर्गीकरण किए गए--घाती और अघाती कर्म। जिन कर्मों से आत्मगुणों का घात होता है अथवा जिन्हें सघन पुरुषार्थ के द्वारा ही तोड़ना संभव होता है, वे घाती

कर्म कहलाते हैं। ज्ञानावरणीय और दर्शनावरणीय--ये दो आवारक कर्म हैं। ये ज्ञान चेतना को आवृत करते हैं। मोहनीय कर्म चेतना को विकृत बनाता है, इसलिए वह विकारक कर्म है। अन्तराय कर्म बाधा उत्पन्न करने वाला होता है। ये चारों घाती कर्म एकान्त अशुभ होते हैं। हमें इनसे बचने पर अधिक ध्यान देना चाहिए।'

पूज्यवर ने आगे कहा--'वेदनीय, आयुष्य, नाम और गोत्र--ये चार कर्म अघाती होते हैं। इनका संबंध भौतिक सुख-दुःख के साथ जुड़ा होता है। ये शुभ और अशुभ, अर्थात पुण्यात्मक और पापात्मक दोनों प्रकार के होते हैं। शरीर में कभी साता (स्वास्थ्य आदि की अनुकूलता) होती है और कभी असाता हो जाती है। इसका कारण बनता है वेदनीय कर्म का उदय। सात वेदनीय कर्म के उदय से प्राणी अनुकूलता को प्राप्त होता है। इसके विपरीत असाता वेदनीय कर्म के उदय से जीव प्रतिकूलता को प्राप्त करता है। अनुकंपा भावना से सातवेदनीय और निष्ठुरता की भावना से असात वेदनीय कर्म का बन्ध होता है। व्यक्ति अपने भीतर निष्ठुरता का भाव न रखे। प्राणिमात्र के प्रति उसके मन में अनुकंपा का भाव रहे।'

कार्यक्रम में साध्वी संवेगप्रभाजी, समणी प्रणवप्रज्ञाजी, समणी विपुलप्रज्ञाजी एवं मुनि विजयकुमारजी ने पृथक-पृथक रूप में गीत का संगान किया। मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ।

egÙoi.k g) x# dk LFkku

f^ tuA परमपूज्य आचार्यवर की पावन सन्निधि में आज पचपदरा अणुव्रत शिक्षक संसद द्वारा एकदिवसीय शिक्षक अहिंसा प्रशिक्षण कार्यशाला का समायोजन किया गया। प्रातःकालीन कार्यक्रम के अन्तर्गत श्रीमती सरोज चोपड़ा आदि महिलाओं ने अणुव्रत गीत को प्रस्तुति दी। राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संस्थान के राष्ट्रीय सहसंयोजक श्री धर्मचन्द जैन तथा श्री भूपत चोपड़ा ने अपने विचार व्यक्त किए। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री संजय खटेड़ ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

मंत्री मुनिश्री ने अपने अभिभाषण में कहा--'शिक्षा का क्षेत्र बड़ा व्यापक है। शिक्षक का जीवन पवित्र एवं कार्यकारी होना चाहिए। शिक्षक के सामने निर्माण का कार्य है। वह विद्यार्थियों का निर्माण करता है, अतः निर्माता है। वह बहुत बड़े दायित्व का निर्वहन करने वाला होता है। यदि वह अपने दायित्व के अनुरूप कार्य करता है तो सफलता उसका वरण कर लेती है।'

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'साधना के क्षेत्र में गुरु का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। गुरु के पथदर्शन में साधक अपनी साधना निर्विघ्न रूप से आगे बढ़ा सकता है। अध्यात्म के क्षेत्र में तो गुरु का वैशिष्ट्य है ही, लौकिक विद्या के क्षेत्र में भी उनकी बड़ी महत्ता है। जो अज्ञानरूपी अंधकार को दूर करता है, वह गुरु होता है। विद्यार्थियों का निर्माण करना शिक्षक का दायित्व होता है। वह शिक्षक अच्छा निर्माता बन सकता है, जो स्वयं अच्छी तरह निर्मित है। शिक्षक यदि ज्ञान और आचार से सुसंपन्न होता है तो वह एक सुसंस्कृत भावी पीढ़ी का निर्माण कर सकता है। विद्यार्थियों को ज्ञान के साथ सदाचार का प्रशिक्षण भी मिलना चाहिए।'

पूज्यप्रवर ने आगे कहा--'परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत के माध्यम से विद्यार्थियों में भी सदाचार का प्रशिक्षण देने का प्रयास किया। व्यक्ति जिस क्षेत्र में कार्य करे, उस क्षेत्र में प्रामाणिक और निष्ठाशील बना रहे। यदि विद्यार्थियों का अच्छा निर्माण होता है तो मानना चाहिए कि संस्कारी युवापीढ़ी तैयार हो सकेगी। विद्यार्थी जितने योग्य होंगे, देश का भविष्य उतना ही उज्ज्वल और समुन्नत होगा। युवापीढ़ी का मानसिक और भावात्मक विकास भी होना चाहिए। शिक्षक विद्यार्थियों में समझ शक्ति के साथ सहनशक्ति, सदाचार और प्रामाणिकता को भी विकसित करने का प्रयास करें। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में अपने पुरुषार्थ का नियोजन करना शिक्षक का दायित्व होता है। यदि पुरुषार्थ अच्छा है तो निष्पत्ति भी अच्छी आ सकती है। अणुव्रत के साथ शिक्षक वर्ग भी जुड़ा हुआ है। अणुव्रत से जुड़े शिक्षक शिक्षा संस्थानों में नैतिकता और सदाचार के संस्कारों को पुष्ट करने हेतु प्रयत्नशील रहें।'

एकदिवसीय शिक्षक अहिंसा प्रशिक्षण कार्यशाला में ७१ शिक्षक संभागी बने। कार्यशाला के विभिन्न सत्रों में मुनि उदितकुमारजी, मुनि दिनेशकुमारजी, मुनि जम्बूकुमारजी (मिंजूर), समणी नियोजिका ऋजुप्रज्ञाजी, डा.वीरेन्द्र गांधी, श्री सतीश शांडिल्य, श्री पुखराज मदानी, श्री रमेश जीनगर, श्री चन्द्रशेखरजी के भी वक्तव्य हुए।

आज पूज्यवर की पावन सन्निधि में अ.भा.तेयुप के तत्वावधान में जोधपुर संभागीय संघीय संस्कार कार्यशला का समायोजन हुआ। संभागियों को पूज्यवर से पावन पाथेय संप्राप्त हुआ। मंत्री मुनिश्री, मुनि उदितकुमारजी, तेयुप प्रभारी मुनि दिनेशकुमारजी, अ.भा.तेयुप के अध्यक्ष श्री संजय खटेड़, मुख्य प्रशिक्षक के रूप में उपासक श्रेणी के प्रभारी श्री डालमचन्द नौलखा ने प्रशिक्षण प्रदान किया। आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति पचपदरा के संयोजक श्री पुखराज मदानी, स्थानीय तेयुप अध्यक्ष श्री आनंद डी. चोपड़ा, मंत्री महेश खतंग, शाखा प्रभारी श्री कान्तिलाल ढेलड़िया, श्री सुरेश लोढ़ा आदि ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। कार्यशाला में ११४ युवकों की संभागिता रही।

vkpk;Z egkizK tUefnol ^izKk fnol* dk :i esa vk;ksftr

f‰ tuA तेरापंथ धर्मसंघ के दसवें अधिशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञ का ९३वां जन्मदिवस प्रज्ञा दिवस के रूप में मनाया गया। अमृत समवसरण में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्य महाप्रज्ञ के गुणों की स्मृति करते हुए हार्दिक विनयांजलि अर्पित की गई। स्थानीय कन्यामंडल एवं महिला मंडल की बहनों, ज्ञानशाला के बच्चों तथा श्री विजयराज संकलेचा ने गीत प्रस्तुत किए। मुनि महावीरकुमारजी ने महाप्रज्ञ अष्टकम को प्रस्तुति दी। मुनि विजयकुमारजी, साध्वी संवेगप्रभाजी, साध्वी चारित्रयशाजी, साध्वी कमलश्रीजी आदि साध्वियों तथा समणी प्रणवप्रज्ञाजी एवं समणीवृन्द के गीत हुए। मुनि विमलकुमारजी, मुनि मदनकुमारजी, मुनि धन्यकुमारजी, समणी निर्मलप्रज्ञाजी ने आचार्य महाप्रज्ञ के व्यक्तित्व की विभिन्न कोणों से व्याख्या की। साध्वी सुषमाकुमारीजी ने कविता प्रस्तुत की। साध्वी कार्तिकयशाजी व साध्वी प्रबुद्धयशाजी ने संस्कृत भाषा में परिसंवाद प्रस्तुत किया। प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री पुखराज मदानी, मंत्री श्री डूंगरमल बागरेचा, स्थानीय महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती चंचल चोपड़ा, सिवांची-मालानी संस्थान के अध्यक्ष श्री पूनमचन्द चोपड़ा, श्री महेन्द्र चोपड़ा, श्री दर्शन मदानी, श्री यश चोपड़ा, श्री डूंगरमल चोपड़ा ने अपने विचार रखे।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने कहा--'हरि अनंत हरि कथा अनंता' की भांति आचार्य महाप्रज्ञ का कर्तृत्व असीम है व व्यक्तित्व अनंत है। उनके अवदान अनगिनत हैं। आप हमें ऐसी शक्ति प्रदान करें कि हम धर्मसंघ की सेवा में आगे बढ़ सकें।'

मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'आज हम एक ऐसे श्रुतपुरुष का जन्मदिन मना रहे हैं, जिनके रोम-रोम में, कण-कण में श्रुत निखरा। श्रुतधर आचार्यों की परंपरा का इतिहास लिखा जाएगा तो आचार्य महाप्रज्ञजी का नाम उसमें अवश्य आएगा। गांव में जन्मा एक भोला-भाला बच्चा पूज्य कालूगणी की छत्रछाया में आया। उसे पूज्य गुरुदेव तुलसी जैसा कुशल शिल्पी मिला। उनका अपना क्षयोपशम था कि वे एक शीर्षस्थ दार्शनिक के रूप में प्रख्यात हुए। तुलसी-महाप्रज्ञ युग ने तेरापंथ को कहां से कहां पहुंचा दिया। आचार्य महाश्रमण के नेतृत्व में पूरे धर्मसंघ में प्रज्ञा का जागरण होता रहे और संघ प्रभावना चलती रहे।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'धरती पर जन्म लेने वाले करोड़ों व्यक्तियों में आचार्य महाप्रज्ञ ने अपनी एक पहचान बनाई। विलक्षणता के घटक हैं--हार्ट, हेड एण्ड हैंड। हार्ट सही हो, संवेदनशील हो, दिमाग ठीक हो और कार्य करने हेतु हाथ सक्षम हों। ये समस्त विलक्षणताएं आचार्य महाप्रज्ञ में थीं। उन्हें आचार्य कालूगणी और आचार्य तुलसी का अद्भुत योग मिला। वे प्रज्ञा के हिमालय थे। उनकी प्रज्ञा से चिंतन के असंख्य निर्झर बहते थे। ग्रंथों से घिरे हुए वे महान निर्ग्रंथ थे। उनकी वह निर्ग्रंथता पूरे धर्मसंघ में संक्रान्त हो।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'प्रज्ञा एक अर्थवान शब्द है। धर्म की समीक्षा प्रज्ञा करती है। दुनिया में कुछ व्यक्ति ऐसे होते हें, जिनमें प्रज्ञा का विकास होता है। महामना आचार्य भिक्षु में विशिष्ट प्रज्ञा थी। जयाचार्य में प्रज्ञा का कितना विकास था। वे विशिष्ट ज्ञानसंपन्न आचार्य थे। कितनी-कितनी गाथाओं की उन्होंने रचना की, कितना स्वाध्याय किया। गुरुदेव तुलसी में भी कितना प्रज्ञा का विकास था। उनका उपयोग निर्मल था। किस प्रकार वे तत्त्वज्ञान की बात करते, कैसे अनुशासन करते और कैसे सहलाते।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'आज के दिन एक ऐसा दिव्य पुरुष धरती पर आया, जो प्रज्ञा के बीज अपने साथ लेकर आया। कुछ बातें कालसापेक्ष होती हैं। समय के साथ परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञ में प्रज्ञा का प्रचुर विकास हुआ। मुझे ऐसे प्रज्ञावान गुरु के सान्निध्य में रहने का मौका मिला, गुरुदेव तुलसी और गुरुदेव महाप्रज्ञ की धर्म देशना प्राप्त करने का अवसर मिला। गुरुदेव तुलसी ने उनको 'महाप्रज्ञ' का संबोधन प्रदान किया। बाद में इस संबोधन को अभिधान के रूप में परिवर्तित कर दिया। उन्होंने आगमों का संपादन और विवेचन किया। आगम संपादन के भगीरथ कार्य में आचार्य महाप्रज्ञ का महनीय योग रहा है। आगम कार्य के साथ प्रेक्षाध्यान, जीवनविज्ञान, अहिंसा प्रशिक्षण का कार्य भी सामने आया। वृद्धावस्था में जिस प्रकार उन्होंने यात्रा की, शासन को संभाला, वह विशेष उल्लेखनीय है।'

तेरापंथ शासन के सौभाग्य की सराहना करते हुए पूज्य आचार्यवर ने कहा--'आचार्य महाप्रज्ञजी जैसे प्रज्ञासंपन्न आचार्य का नेतृत्व हम सबको प्राप्त हुआ। उनमें केवल वैदुष्य ही नहीं, साधना थी, अध्यात्म की आराधना थी, अहिंसा की चेतना का विकास था। हम भी अपने जीवन में अध्यात्म की साधना के प्रकर्ष को प्राप्त करने का प्रयास करें। आचार्य महाप्रज्ञ ध्यान, स्वाध्याय, चिंतन-मनन के साथ राजनेताओं का भी पथदर्शन करते थे। सरदारशहर में अचानक साक्षात् रूप से अदृश्य हो गए। हम उनके अवशिष्ट कार्यों को यथोचित आगे बढ़ाने का प्रयास करें। मुझे दो-दो धर्मगुरुओं के सान्निध्य में रहने का अवसर मिला। देहावसान के बाद यशःशरीर कुछ समय तक बना रह सकता है। जीवनकाल की समाप्ति के बाद भी जिनका स्मरण किया जाए तो यह मानना चाहिए कि उस विशिष्ट व्यक्तित्व का यशःशरीर हमारे बीच विद्यमान है। हम भी अपने जीवन में प्रज्ञा व साधना का विकास करें।'

lkèoh deyJhth ^'kkluJh* l lckfèkr

आचार्यवर ने प्रसंगवश कहा--'साध्वी कमलश्रीजी गुरुदेव महाप्रज्ञजी की कजिन भगिनी हैं। मुझे भद्र स्वभाव की साध्वी लगीं। संस्कृत भाषा का इनका अच्छा विकास है। इनकी विशेषताओं का अंकन करते हुए मैं इन्हें **'kkluJh lkèoh deyJhth** के रूप में संबोधित करता हूं।

मुनि विमलकुमारजी स्वामी संस्कृत, प्राकृत के अच्छे विद्वान संत हैं, भद्र संत हैं। गुरुदेव महाप्रज्ञजी के पास रहे हैं। मैंने भी इनके पास रहकर कुछ दिन तक अध्ययन किया है।' आचार्यवर ने अनुग्रह करके मुनि विमलकुमारजी का चतुर्मास अपने साथ जसोल में करने की घोषणा की। मुनिश्री ने इस कृपा के प्रति आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम में तपस्वी श्रावक श्री बाबूलाल ढेलड़िया देवता ने तिरपन दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। जसोल प्रवास व्यवस्था समिति के पदाधिकारियों ने चातुर्मास प्रवेश की आमंत्रण पत्रिका भेंट की। इस संदर्भ में समिति के संयोजक श्री गौतम सालेचा ने अपने विचार व्यक्त किए। श्री माणकचन्द चोपड़ा ने सपत्नीक आजीवन शीलव्रत स्वीकार किया। कार्यक्रम का संयोजन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

रात्रि में कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ। इसमें कवि श्री शहनाज हिन्दुस्तानी, श्री माधव दरक, श्री शरबाज ने अपनी प्रभावी प्रस्तुतियां दीं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थानीय शाखा के कार्यकर्ता आचार्यवर की पावन सन्निधि में पहुंचे और पथदर्शन प्राप्त किया। स्थानीय संघ प्रचारक श्री दयाराम खारवाल ने आज्ञार ज्ञापित किया।

rjg fu;e g [ktkuk o dkil

fŠ tuA प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'सर्वज्ञों की आज्ञा सबके लिए त्राणदायक होती है। तेरापंथ धर्मसंघ के सदस्यों में गुरु आज्ञा के प्रति जागरूकता है। गुरुआज्ञा रक्षाकवच है। हमारे धर्मसंघ की एकता व अखण्डता का आधार आज्ञा है। आज्ञानिष्ठा तेरापंथ में जन्मघूंटी के साथ प्राप्त होती है। यह आज्ञानिष्ठा साधु-साध्वियों तक ही सीमित नहीं है, श्रावक समाज में भी संक्रान्त है।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने आज चतुर्दशी होने से हाजरी का वाचन किया। इसकी विभिन्न धाराओं का विशद विश्लेषण करते हुए आचार्यप्रवर ने कहा--'साधु के लिए पांच महाव्रत, पांच समिति और तीन गुप्ति--ये तेरह नियम खजाना है, संपदा है, धरोहर है, कॉर्पस है। इन्हें सुरक्षित रखना चाहिए। जो साधु केवल ध्यान करता है, पर अहिंसा आदि धर्मों व व्रतों का पालन नहीं करता, उसकी साधना अधूरी है। ध्यान के साथ महत्त्वपूर्ण है व्रतों का सम्यक् प्रतिपालन। व्रतों के परिपालन करनेवाले का कल्याण सुनिश्चित है। समिति व गुप्ति के प्रति जागरूक रहने से महाव्रतों की सुरक्षा होती है। हमारे लिए महाव्रत वीवीआईपी हैं। उनकी सुरक्षा व्यवस्था कितनी चुस्त होती है। इसी तरह महाव्रतों की व्यवस्था समीचीन होनी चाहिए। चलने, बोलने, खाने, बात करने व व्याख्यान देने को भी मैं साधना मानता हूं। साधु में साधना का लक्ष्य प्रमुख रहे। प्रतिक्रमण व प्रतिलेखन में भी सजगता और चर्या के नियमों के प्रति सावधानी रहनी चाहिए।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'हमारी साधना संघबद्ध साधना है। हमारे मन में संघनिष्ठा का भाव बना रहना चाहिए। यह भाव पुष्ट भी होता रहे और वृद्धिंगत भी होता रहे। सामने अगर कठिनाइयां आती हैं तो उन कठिनाइयों को कर्म निर्जरा का हेतु मानकर झेल लेना चाहिए।'

आज्ञानिष्ठा की चर्चा करते हुए आचार्यप्रवर ने कहा--'सबमें आज्ञानिष्ठा होनी चाहिए। आज्ञा में तर्क नहीं करना चाहिए।' मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी की आज्ञानिष्ठा का उल्लेख करते हुए आचार्यवर ने कहा--'मंत्री मुनि को लोच करना है तो पहले मेरे पास पधारेंगे, लोच की आज्ञा लेंगे, बाद में लोच करेंगे। लोच के बाद वापस आएंगे। क्लास लेने के लिए पधारने से पहले स्वयं पधारेंगे। यदि आने में कठिनाई है तो संतों को भेजकर कनवेदन कराते हैं। आलोयणा लेने के लिए भी मेरे पास पधारते हैं। ऐसा नहीं है कि अपने आप ही ले लें। बहुश्रुत परिषद के सदस्य मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी भी आलोयणा लेने के लिए सुबह-शाम मेरे पास पधारते हैं या संतों को मेरे पास भेजकर आलोयणा-प्रायश्चित्त मंगवाते हैं।'

सेवा की प्रेरणा देते हुए आचार्यवर ने साधु-साध्वियों, समण-समणियों एवं श्रावक समाज की सेवा को उल्लेखनीय बताया और प्रसंगवश कहा--'इसी चोखले की साध्वी महिमाश्री को इलाज हेतु जोधपुर भेजना था। बालोतरा में उनका इलाज संभव नहीं बैठ रहा था। इस गर्मी में भी हमारी साध्वियां सेवा हेतु जाने को तैयार हो गईं। साध्वी हेमलताजी, साध्वी गौरवप्रभाजी और साध्वी मनोज्ञयशाजी उन्हें साधन से ले गईं और पुनः हमारे पास आ गईं। सेवा हेतु सबको सदैव तत्पर रहना चाहिए।'

आज बड़ी हाजरी हुई। सभी साधु-साध्वियों और समणियों ने दीक्षाक्रम से पंक्तिबद्ध खड़े होकर लेखपत्र का समुच्चारण किया। कार्यक्रम में अनीता संकलेचा व विद्या भंसाली ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

मध्याह्न में पचपदरा ग्राम पंचायत की सरपंच श्रीमती कलावती खारवाल सहित कई वार्ड पंचों व कर्मचारियों ने सामूहिक रूप से दर्शन किए। आचार्यवर ने सबको नशामुक्त व सौहार्दपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा दी। पूर्व सरपंच श्री विजयसिंह खारवाल ने ग्राम पंचायत के कार्यों की जानकारी दी। उपसरपंच श्री राकेश चोपड़ा ने आभार ज्ञापित किया।

lkèkuk dk lkj g ekg dk iru djuk

f‹ tuA प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'समय का सार्थक उपयोग

आवश्यक है। धार्मिक गतिविधियों में समय का समुचित नियोजन हो। एक गृहस्थ को आवश्यक कार्य करना होता है, पर अपने अतिरिक्त समय को धर्माराधना में लगाएं। धार्मिक बने हैं तो जीवन में विवेक को अंगीकार करें, प्रमाद से बचें और श्रावकत्व को सार्थक बनाएं।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने मोहनीय कर्म पर प्रवचन करते हुए कहा--'मोह ऐसा तत्त्व है, जिससे प्राणी आवृत हो जाता है तो वह मंद हो जाता है। आकाश में सूर्य के आगे बादल आ जाए तो उसका प्रकाश मंद हो जाता है। इसी तरह चेतना के प्रकाश पर मोह का बादल आ जाता है तो चेतना की ज्योति व वीतरागता मंद पड़ जाती है। जैन कर्मवाद में वर्णित आठ कर्मों में एक है मोहनीय कर्म। यह घाती कर्म की प्रकृति है। प्राणी के पाप कर्म का बंधन होता है, उसकी पृष्ठभूमि में मोहनीय का उदय ही रहता है। इसके अभाव में पाप कर्म का बंध नहीं हो सकता, पुण्य का बंध हो सकता है। पाप की दृष्टि से कर्मों का प्रमुख है मोहनीय। पापरूपी वृक्ष की जड़ है मोहनीय कर्म।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'मद्यपान करने वाला अपनी सुधबुध खो देता है। वह उन्मत्त हो जाता है। जब मोहकर्म से चेतना प्रभावित हो जाती है, तब वह भी सुधबुध खो देती है। उस समय चेतना क्रोध, अहंकार, माया आदि से प्रभावित हो जाती है। मोहनीय कर्म के दो विभाग हैं--दर्शन मोहनीय एवं चारित्र मोहनीय। दर्शन त्रिक् एवं अनंतानुबंधी कषायचतुष्क के विलय से सम्यक्त्व की उपलब्धि होती है। अनंतानुबंधी आदि चार विभागों में प्रत्येक के साथ क्रोध, मान, माया व लोभ--ये चतुष्क जुड़ा हुआ है। अनंतानुबंधी कषाय चतुष्क का उदय हो तो सम्यक्त्व की प्राप्ति नहीं हो सकती। इसी तरह अप्रत्याख्यानी, प्रत्याख्यानी व संज्वलन कषाय चतुष्क का उदय रहता है तो क्रमशः श्रावकत्व, साधुत्व एवं वीतरागता की प्राप्ति नहीं हो सकती। मोह सम्यक्त्व से वीतरागता तक सबको प्रभावित करता है। शैतान शब्द के अर्थ पर विमर्श करें तो मोहनीय शैतान कर्म है। यह सबको बहुत परेशान कर देता है।'

मोह को प्रतनु करने की दिशा में साधनारत रहने की प्रेरणा प्रदान करते हुए पूज्य आचार्यवर ने कहा--'मोहनीय का संयुक्त परिवार है। इस परिवार के क्रोध आदि सदस्य साथ रहते हैं। इस संयुक्त परिवार को तोड़ना है तो इसके एक-एक सदस्य को कमजोर करें। तीन-तीन माह के लिए क्रमशः एक-एक को कमजोर करने की साधना चले। इस संदर्भ में धर्मगुरु मार्गदर्शन देते हैं। वीतरागता की प्राप्ति तभी संभव है, जब आवेग, आवेश शान्त हों। परिवारों में होने वाली अशांति के पीछे एक कारण आवेश है। इनको न्यून करने की साधना चले। माया व लोभ से बचें तो पारिवारिक शांति संभव है। शास्त्र श्रवण व स्वाध्याय उपयोगी उपक्रम हैं। इनसे प्रेरणा मिल सकती है। उपशम का अभ्यास पुष्ट हो। मोह के पथ पर चलोगे तो मोक्ष के रास्ते से भटक जाओगे और मोक्ष मार्ग पर बढ़ोगे तो मोह कमजोर हो जाएगा।'

कार्यक्रम में मुनि विजयकुमारजी एवं साध्वी मार्दवयशाजी ने गीत प्रस्तुत किया। जोधपुर के श्री सिद्धराज भंडारी, श्री दलपत लोढ़ा एवं विधायक श्री कैलाश भंसाली ने अपने प्रासंगिक विचार रखे। अहमदाबाद तेरापंथ सभा के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री महेन्द्र चोपड़ा ने अपनी कार्यकारिणी के साथ आचार्यवर के दर्शन किए। उन्होंने अपने विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

आज राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रान्त प्रचारक श्री मुरलीधर ने आचार्यवर के दर्शन किए एवं समसामयिक स्थितियों पर पूज्यवर से चर्चा की।

Lefr&lcy

- सरदारशहर निवासी अहमदाबाद प्रवासी श्री नथमल नाहटा का निधन हो गया। मूलतः राजगढ़ के इस नाहटा परिवार से साध्वी मालूजी, साध्वी मोहनाजी, साध्वी रतनकुमारीजी, साध्वी सिरेकुमारीजी, साध्वी गोरांजी, साध्वी हरकंवरजी, साध्वी लिछमाजी ने दीक्षित होकर संघ की सेवा की है। गुवाहाटी तेरापंथ भवन के निर्माण में इनका भी योगदान रहा। वे स्वयं इतने शिक्षित नहीं थे, पर इनके पांच

पुत्रों के सत्ताईस सदस्यों में तेरह पोस्ट ग्रेज्युएट व दस ग्रेज्युएट हैं। अपनी सास दाखांदेवी पींचा के पचहत्तरदिवसीय संथारे के बाद नाहटाजी का धार्मिक रुझान बढ़ता गया। त्याग-प्रत्याख्यान के बीच सागारी अनशन में उनका स्वर्गवास हो गया।

- छोटीखाटू निवासी चेन्नई प्रवासी श्री अमोलकचन्दजी भंडारी का स्वर्गवास हो गया। वे चेन्नई के वरिष्ठ श्रावक थे। भंडारी परिवार धर्मनिष्ठ परिवार है।
- सुजानगढ़ निवासी कोलकाता प्रवासी श्रीमती किरणदेवी राखेचा (धर्मपत्नी-श्री झणकारमलजी राखेचा) का देहावसान हो गया। रात्रि भोजन का यावज्जीवन परिहार रखने वाली श्रीमती किरणदेवी के प्रतिदिन दो सामायिक, जप आदि का क्रम था। चतुर्मास में वे गुरु उपासना का लाभ लेती रहीं। उनके ससुर उदयचन्दजी के पात्रदान की बलवती भावना रहती थी। परिवार में यह संस्कार आज भी जीवंत है।
- सायरा निवासी सूरत प्रवासी श्री हुकमीचन्दजी कावड़िया का देहान्त हो गया। उनके सामायिक, जप आदि धार्मिक उपासना का नित्यक्रम था।
- गंगाशहर निवासी सिलचर-गुवाहाटी प्रवासी श्री मूलचन्दजी भंसाली का देहावसान हो गया। उनका जीवन धार्मिकता से ओतप्रोत था। सामायिक आदि नित्य उपासना का क्रम था। प्रायः प्रतिवर्ष गुरुदर्शन किया करते थे। देहावसान के बाद उनका नेत्रदान किया गया। उनकी धर्मपत्नी गौरादेवी तपस्विनी व श्रद्धानिष्ठ श्राविका है।
- लाडनूं निवासी गुवाहाटी प्रवासी श्रीमती सोहनदेवी कोठारी (धर्मपत्नी-स्व.जयचन्दलालजी कोठारी) का चौरानबे वर्ष की अवस्था में पैंतीस मिनट के संथारे में स्वर्गवास हो गया। वह श्रद्धालु और समर्पित श्राविका थीं। उनके पति जयचन्दलालजी कोठारी तत्त्वज्ञ श्रावक थे। उनमें तत्त्व की अच्छी समझ व पकड़ थी। आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के कृपापात्र थे।
- पचपदरा निवासी कोप्पल-हुबली प्रवासी श्रीमती समदादेवी चोपड़ा (धर्मपत्नी-स्व.घमंडीरामजी चोपड़ा) का डेढ़ घंटे के संथारे में स्वर्गवास हो गया। वह तपस्विनी और सेवाभावी श्राविका थीं। उनकी जेठाणी श्रीमती अणचीदेवी के भी अठारह दिनों का संथारा आया था। उन्हें 'तपोनिष्ठ श्राविका' संबोधन प्राप्त था।
- उदासर निवासी श्रीमती मूलीदेवी महनोत (धर्मपत्नी-श्री दीपचन्दजी महनोत) का देहावसान हो गया। वे धार्मिक संस्कारों से ओतप्रोत श्राविका थीं। उदासर में संतदर्शन, प्रवचन श्रवण आदि का नित्यक्रम था। उनकी विशेष प्रेरणा का ही परिणाम है कि प्रत्येक शुक्ला त्रयोदशी को परिवार में उपवास व त्यागमय वातावरण रहता है। पूरे परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।
- छापर निवासी श्रीमती रायकंवरीदेवी मालू (धर्मपत्नी-स्व.मोहनलालजी मालू) का दिल्ली में देहान्त हो गया। वे साध्वी सिरेकंवरजी की संसारपक्षीया बहन थीं। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी द्वारा 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन प्राप्त रायकंवरीदेवी ने तीन वर्षीतप व इक्कीस तक की लड़ी संपन्न की थी। बारह वर्ष की उम्र से जमीकन्द और रात्रि भोजन का परित्याग था। तीस वर्षों से दो माह एकान्तर तप और प्रतिदिन आठ सामायिक के साथ जप में तल्लीन रहती थीं। उनके ज्येष्ठ पुत्र विजयसिंहजी राजकोट के व दो पुत्र अहमदाबाद के अच्छे कार्यकर्ता और कनिष्ठ पुत्र नरपतजी दिल्ली तेरापंथी सभा के मंत्री हैं।

nh{kk lekjkg dk vk;ktu

२१ जून को पचपदरा में समायोजित दीक्षा समारोह में परम श्रद्धेय आचार्यवर ने दो समणियों, तीन भाइयों तथा दो बहनों को मुनि दीक्षा प्रदान की। दीक्षा समारोह की विस्तृत रिपोर्ट पढ़ें आगामी विज्ञप्ति में। नवदीक्षित साधु-साध्वियों के नाम इस प्रकार हैं--

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

१. मुमुक्षु अशोक (चेन्नई)	मुनि अनेकान्तकुमार	४. समणी वर्धमानप्रज्ञा(व्यावर)	साध्वी वर्धमानयशा
२. मुमुक्षु जय (वाव)	मुनि जागृतकुमार	५. समणी सुयशप्रज्ञा(परतूर)	साध्वी संबोधयशा
३. मुमुक्षु विवेक (बरपेटारोड)	मुनि विवेककुमार	६. मुमुक्षु वीणा (कनाना)	साध्वी विधिप्रभा
		७. मुमुक्षु हर्षिता(बरपेटारोड)	साध्वी हिमांशुप्रभा

rjkiFk uVod l tMu dk vujkèk

तेरापंथ समाज में पारिवारिक परिचय और सहयोग की अभिवृद्धि के उद्‌देश्य से w.w.w. terapanthnetwork.com वेबसाइट का निर्माण किया गया है। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा ने सभी तेरापंथी परिवारों से प्रस्तुत वेबसाइट से जुड़ने का अनुरोध करते हुए जानकारी दी है कि इसके अन्तर्गत मुख्य रूप से बिजनेस डायरेक्ट्री, नेटवर्क, जॉब आदि की सुविधा उपलब्ध है। अधिक जानकारी के लिए श्री विकी जैन, मोबाइल नं. ०९९९७४३३९९३ से सम्पर्क किया जा सकता है।

vkn'k lkfgR; l?k dk HkV

५१००/- स्व. श्री पारसमलजी गोलेच्छा (बाड़मेर) की ८वीं पुण्यतिथि पर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती देवीबाई, सुपुत्र व पुत्रवधू सोहनराज-कमलाबेन, मदनलाल-पुष्पाबेन, ओमप्रकाश-भवानीबेन एवं समस्त गोलेच्छा परिवार, बाड़मेर-जोधपुर-अहमदाबाद-सूरत द्वारा प्रदत्त।

३१००/- स्व. श्रीमती समदाबाई चोपड़ा (धर्मपत्नी-स्व. घमंडीरामजी चोपड़ा, पचपदरा) के प्रभावक संथारे के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र ओमप्रकाश, महेन्द्रकुमार, सुपौत्र विकास, आशीष, अभिषेक चोपड़ा, कोप्पल-हुबली (कर्नाटक) द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री बाबूलाल धाड़ेवा (सुपुत्र-श्री जयचन्दलालजी धाड़ेवा, रतनगढ़-किशनगंज) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सम्पतदेवी धाड़ेवा व सुपुत्र महावीरकुमार धाड़ेवा द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रद्धा की प्रतिमूर्ति स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी घीया (धर्मपत्नी-स्व. सोहनलालजी घीया, सरदारशहर) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र विजयसिंह, कमलसिंह, सुरेन्द्रसिंह, सुपौत्र रविप्रकाश, विमल, पंकज, सौम्य घीया, अहमदाबाद द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्री धर्मचन्दजी बड़ाला एवं श्रीमती सुखीदेवी बड़ाला (पड़ासली) के दाम्पत्य जीवन की ५०वीं वर्षगांठ (स्वर्णजयंती) एवं पूज्यप्रवर के सान्निध्य में 'जीवन पथ की सार्थकता' पुस्तक के लोकार्पण के उपलक्ष्य में पारस, अशोक, महावीर बड़ाला, द्वारा-प्रेस्टिज ज्वेलर्स, डोंबीवली (महा.) द्वारा प्रदत्त।

२१००/- वाव एवं उसके आसपास के क्षेत्रों से १२०० व्यक्तियों का संघ परमपूज्य आचार्यवर के दर्शनार्थ समदड़ी पहुंचने के उपलक्ष्य में पांच सौ बोहरा परिवार, सूरत द्वारा प्रदत्त।

nh{kk ,o ifrØe.k vkn'k

„f tuA परम पावन आचार्यप्रवर ने ५ नवम्बर को जसोल में समायोज्य दीक्षा महोत्सव पर मुमुक्षु धीरज (तोशाम) को मुनि दीक्षा प्रदान करने की उद्‌घोषणा की है तथा मुमुक्षु खुशबू (जसोल) को साधु प्रतिक्रमण सीखने का आदेश प्रदान किया है।

d'koi lkn pronh] icU/kd&vkn'k lkfgR; l?k] }kjk&vkpk; egkJe.k iokl 0;oLFkk lfefr]
ik- tlky&…††,„† ft- ckMej ¼jktLFkku½ Qku ¼ ‹^Š,,‡‡…Šf] ‹…‡„†,†^†f
दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com
idk'ku fnukd ¼ „…&^&„,f„

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **d'koi lkn pronhA**